सृजनशीलता : प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में कलाओं की भूमिका

आशा सिंह

"कलाएँ ही शिक्षा का आधार होती हैं।"

देवी प्रसाद

(मूर्तिकार एवं शांति कार्यकर्ता)

छोटे बच्चे ऐसे संवादों की शृंखला प्रदान करते हैं जो सम्बन्धों को निर्मित करने के प्रति गहरा लगाव दर्शाते हैं, जो तुलना करते हैं और अपने आसपास के संसार का मतलब समझने के लिए अपने स्वयं के निहितार्थ निकालते हैं। उनके संवादों के दायरे में ऐसी बातें हो सकती हैं कि 'बारिश इसलिए होती है कि शिक्षिका बाल्टियाँ भर–भर के पानी को ऊपर, और उससे भी ऊपर फेंकती हैं'। अपने प्ले–स्कूल को थोड़ा जल्दी छोड़कर आने के लिए मजबूर हुए तीन साल के एक रुष्ट बच्चे ने शिकायत की, 'माँ आप जल्दी क्यों आ जाती हैं?' एक चार साल का बच्चा खीझ जाता है जब बेतरतीबी से रखी गई गद्दियों को माँ व्यवस्थित कर देती है और वह चीखकर कहता है, "आपने शेर की गुफा खराब कर दी, अब हिरण पकड़ा जाएगा!" बचपन के ऐसे किस्से बच्चों की सोच तथा सोचने की प्रक्रियाओं की जीवन्तता व्यक्त करते हैं। वे अभिनव तरीकों से सोचने की और भौतिक–सामाजिक यथार्थ का अर्थ निकालने की उनकी क्षमता दर्शाते हैं। उनके वक्तव्य बड़े लोगों के हस्तक्षेपों द्वारा निर्मित होने के बजाय उनके अपने अनुभवों और अन्वेषणों से बने ताजे दृष्टिकोणों की ओर इशारा करते हैं। बच्चे सृजनात्मक दिमागों और विविध परिकल्पनाओं को प्रतिबिम्बित करते हैं।

शब्दकोष सृजनशीलता को अभिनव और प्रवर्तनकारी सोच की तरह परिभाषित करता है। सृजनशीलता अन्वेषण और खोज के द्वारा मौलिक धारणाएँ निर्मित करने की प्रक्रिया है। सिखाने–सीखने की प्रक्रिया में इस बात को समझना महत्त्वपूर्ण है कि सृजनशीलता प्रक्रिया के अनुभव से, न कि अन्तिम उत्पाद की चिन्ता करने से, विकसित होती है। सृजनशीलता प्रतिभा, कौशल या बुद्धिमत्ता से कुछ अधिक है। सृजनशीलता स्पर्धा से, या दूसरों की अपेक्षा कुछ बेहतर करने से, ऊपर होती है; इसका सम्बन्ध सोचने, अन्वेषण करने, खोजने, तथा कल्पना करने से होता है। हम बच्चों में किस तरह संसार से ऐसे सक्रिय जुड़ाव को बढ़ावा दे सकते हैं ताकि वे उसकी अनोखी सम्भावनाओं का आनन्द ले सकें और प्रवर्तनकारी सोच विकसित कर सकें? अकसर माना जाता है कि कलाकार सृजनशील होते हैं और कलाओं में उत्कृष्टता ही सृजनशीलता होती है।

हालाँकि, यह सही है कि व्यावसायिक संस्थान भी अपना उत्पाद बेचने में सृजनशील हो सकते हैं, जैसे कि अमूल के विनोदपूर्ण तथा समसामयिक विज्ञापन होते हैं। एक किसान भी सृजनशील हो सकता है यदि वह पौधों को इस तरह रोपता है कि वे जटिल संरचनाएँ निर्मित करते हैं, और एक माँ अपने गृहिणी होने पर गर्व करते हुए अपने घर में रुचिकर स्थानों का सृजन कर सकती है। इसी प्रकार अनेक माता–पिता अपने बच्चों के लिए आश्चर्यजनक कहानियाँ गढ़ते हैं जो आनन्द देती हैं और लगाव के गहरे सम्बन्ध रचती हैं। तथापि, यह भी सही है कि विविध विचारों को प्रोत्साहित करने में और प्रवर्तनकारी सोच को बढ़ावा देने में कलाएँ विशेष रूप से उपयोगी होती हैं। सृजनशीलता एक रवैया है, सोचने के ऐसे तरीके हैं जो रोजमर्रा के अनेक सिलसिलेवार उबाऊ कामों को ऊर्जा दे सकते हैं, और अनुभव हैं जो हमें स्वतंत्र रूप से सोचना सिखाते हैं। अन्वेषण, प्रयोग तथा अनुभव, ये तीनों ही एक सृजनात्मक वयस्क व्यक्ति बनने की ओर बढ़ने के लिए छोटे बच्चों में सुदृढ़ आधार निर्मित करते हैं। 'तोत्तोचान' एक ऐसी जापानी टेलीविजन एंकर द्वारा लिखी गई किताब है जो अपनी गतिमान सफलता के लिए अपने स्कूल के रोमांचक अनुभव और अवसर को श्रेय देती है। करने की स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, और सबसे बढ़कर गलतियाँ करने की स्वतंत्रता तथा विकल्पों के बारे

में सोचने के लिए मार्गदर्शन दिया जाना, ये सभी समस्याओं को सुलझाने के कौशल, आत्मविश्वास और स्वतंत्र सोच को विकसित करने में सहायक होते हैं। रोजमर्रा के साधारण कामों को कौतुकपूर्ण प्रयोगों की तरह करने के जटिल संजाल में ही सृजनशीलता गुँथी हुई रहती है।

सृजनशीलता का पोषण करना

स्कूली पढ़ाई में निश्चित रूप से ऐसी पद्धतियों द्वारा संचालित होने की प्रवृत्ति होती है जो अलग–अलग व्यक्तियों में योग्यताओं तथा रुचियों की विविधता पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाय समूह को ही सम्बोधित करती हैं। स्कूली पढ़ाई का आरम्भ मुख्य रूप से छपे हुए ज्ञान को हासिल करने पर आधारित होता है जो जरूरी नहीं कि सीखने वाले को प्रोत्साहन प्रदान करे, क्योंकि हो सकता है कि उसकी विशेष योग्यता दृश्यात्मक स्मरणशक्ति या आकार और स्थान की समझ हो। सीखने के आधार के रूप में कला, कक्षाओं की एकरस जड़ता को तोड़ते हुए, अनेक जादुई आश्चर्यों को उघाड़ती है क्योंकि इसकी विधियाँ गतिसंवेदी और दृश्यात्मक स्मृति से सम्पन्न सीखनेवालों को भी शामिल करती हैं।

ऐसा लगता है कि कलाएँ विविध प्रकार के सीखनेवालों के समूह को सम्बोधित करती हैं क्योंकि वे सम्प्रेषण के अधिक रास्ते खोल देती हैं। जिन बच्चों को पाठ्यसामग्री नहीं रुचती और जिनकी क्रमिक स्मरणशक्ति कम होती है, उनका रुझान ऐसे माध्यम की ओर होता है जिसमें ढाँचे में न बँधी हुई अभिव्यक्ति के लिए कुछ गुंजाइश होती है। कलाओं की बँधी हुई परिभाषाएँ नहीं होतीं, और वे जमीन के नीचे जड़ों वाले पेड़ और साथ ही ऊपर आकाश में लटक रही जड़ों वाले पेड़, दोनों को सराहती हैं। समय के साथ स्कूली व्यवस्थाओं को शिक्षा में कलाओं के पूरे परिमाण और उनके सकारात्मक योगदान को समझना जरूरी है।

बीसवीं सदी के भारतीय चिन्तकों रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा श्री अरविन्द ने प्राथमिक रूप से कलाओं को आधार बनाते हुए समेकीकृत शिक्षा का प्रतिपादन किया है। उन्होंने शिक्षा में ऐसी संवेदनशीलता पर जोर दिया जो कक्षा में सांस्कृतिक जड़ों वाली तकनीकों के माध्यम से भावनाओं और अध्यात्मिकता का पोषण करती है। कलाएँ ऐसी भाषाएँ हैं जिन्हें अधिकांश लोग बोलते हैं, भले ही उनकी संस्कृतियाँ, भाषाएँ, भौगोलिक स्थितियाँ, शैक्षणिक पृष्ठभूमियाँ और यहाँ तक कि योग्यताएँ भिन्न–भिन्न हों। संगीत तथा गति जीवन की लयों का आधार होती है, यही कारण है कि एक बेचैन बच्चे को भी पुनरुक्तिपूर्ण ध्वनियों की लय से क्षणिक आराम मिलता है। अनेक अध्ययनों के द्वारा यह देखा गया है कि अक्षमताओं से ग्रस्त बच्चों के बढ़ने और विकास में कलाएँ योगदान देती हैं। इस बात पर गौर किया जाना समान रूप से महत्त्वपूर्ण है कि विभिन्न प्रकार के कौशल समूहों वाले समुदायों में कलाएँ उन्हें जोड़े रखने का काम भी करती हैं।

पश्चिम के अकादमिक संसार में, "समेकित दृष्टिकोण" की अनुगूँज हॉवर्ड गार्डनर के बहु–बुद्धियों के सिद्धान्त में सुनाई देती है जो सुझाता है कि हमारी स्कूली व्यवस्थाएँ हमारी संस्कृति को प्रतिबिम्बित करती हैं। वे मुख्य रूप से दो प्रकार की बुद्धियों – शाब्दिक तथा तार्किक–गणितीय – को ही सिखाती, परीक्षण करती और पुरस्कृत करती हैं। इन्हें अकसर बुनियादी कौशलों का आधार माना जाता है। परन्तु, उनका सुझाव है कि कम से कम पाँच अन्य प्रकार की बुद्धियाँ भी होती हैं जो उतनी ही महत्त्वपूर्ण हैं। वे भी "भाषाएँ" हैं जिनकी अपनी संकेत व्यवस्थाएँ होती हैं जिन्हें अधिकांश लोग बोलते हैं और जो व्यक्तिगत भिन्नताओं के व्यापक दायरे तक पहुँचती हैं। इनमें दृश्यात्मक/स्थानिक, शारीरिक/गतिसंवेदी, संगीतात्मक, अन्तर्वैयक्तिक, तथा अन्तर्चेतना की बुद्धियाँ शामिल हैं। ये बुद्धियाँ दृश्य कलाओं, संगीत, नृत्य तथा नाटक को आधार प्रदान करती हैं, और इन कला रूपों के माध्यम से अधिकांश विद्यार्थियों को न केवल सम्प्रेषण और आत्म–अभिव्यक्ति के साधन मिलते हैं, बल्कि अर्थ निर्मित करने और तकरीबन किसी भी विषय को कारगर ढंग से समझने के औजार भी प्राप्त होते हैं। यह बात तब विशेष रूप से सच होती है जब कलाओं को न केवल अलग विषयों की तरह पढ़ाया जाता है बल्कि उन्हें प्रत्येक स्तर पर समूचे पाठ्यक्रम में समाहित कर दिया जाता है। कलाएँ अनेक विषयों को जीवन्त बना सकती हैं और अमूर्त कल्पनाओं को अनुभूत यथार्थ बन जाने का अवसर प्रदान कर सकती हैं।

चित्रांकनों से बच्चों की सोच के बारे में महत्त्वपूर्ण अन्तर्दृष्टियाँ प्राप्त होती हैं। बच्चों के चित्रांकनों को संवाद के आधार के रूप में लेना महत्त्वपूर्ण होता है। जब बच्चे उसे रचते हैं जो हमें वक्रों, रेखाओं या टेढ़े–मेढ़े चिन्हों का समूह प्रतीत होता है, तो उनके बीच सम्बन्धों का एक पूरा सिलसिला होता है जो बच्चे के मन की 'आँख' द्वारा रचा

जाता है। कक्षा में कला बच्चे को खोजबीन करने तथा अपने को अभिव्यक्त करने की सुविधा देती है। सटीकता के साथ निरूपित करने की कला उसके बाद आएगी, प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ई.सी.ई.) की कक्षा को विशेज्ञता पर ध्यान केन्द्रित करने की नहीं, बल्कि अनुभवों के लिए अवसर उपलब्ध करवाने की जरूरत होती है।

अनुभव के रूप में कलाएँ तीन प्रकार से प्रारम्भिक बाल्यावस्था कार्यक्रमों का हिस्सा हो सकती हैं। एक वह तरीका है जिसका वर्णन वार्षिक आयोजनों के दौरान प्रदर्शनों के रूप में किया जाता है। दूसरा रोजमर्रा के कक्षा के क्रियाकलापों में कलाओं का उपयोग करना है। अधिकांश शिक्षक, विशेष रूप से ज्यादा प्रगतिशील परिवेशों में, वार्षिक उत्सवों को आयोजित करने से परिचित होते हैं, और रोजमर्रा की दिनचर्या में कला का इस्तेमाल करने का भी प्रयास करते हैं। इनके अलावा, एक तीसरा दृष्टिकोण किसी कलाकार से मिलने का है जो बच्चों के साथ एक दिन बिताता है।

दैनिक कामकाज की लयों में कला : क्रीड़ामय क्रियाकलाप

हाल के वर्षों में, 'बाल केन्द्रित शिक्षा' की वकालत करने वालों ने बच्चों के सीखने की शैलियों में विविधता को लेकर एक विमर्श उत्पन्न किया है। बच्चों की सामाजिक, संज्ञानात्मक तथा भावनात्मक क्षमताओं की विविधता के बारे में और साथ ही उनमें भाषायी परिवर्तनशीलता के बारे में जागरूकता बढ़ती जा रही है। ई.सी.ई. के शिक्षक की तरह हमारे दिमागों को कक्षा की विविधता के प्रति सचेत रहने की, और ऐसे तरीके खोजने की जरूरत है जिनसे सीखने के औपचारिक परिवेशों के भीतर बच्चे अपने लिए निजी जगह बना सकें। एक साधारण–सा गुड़ियों का कोना विभिन्न भूमिकाएँ खेलने के लिए, तथा भावनाओं और दृष्टियों को व्यक्त करने वाले संवादों के लिए ढेर सारे अवसर उपलब्ध करा सकता है। सब्जियों से चित्र बनाना और प्रकृति की सैर के दौरान इकट्ठी की गई पत्तियों को जमाना मजेदार होता है तथा प्रकृति, कक्षा और सीखने के सम्बन्धों को पोषित करता है। संगीत, कहानी सुनाना, कठपुतलियों का तमाशा देखना और दौड़भाग, इन सबमें कई कौशल शामिल रहते हैं, और वे बहु–क्षेत्रीय सीखने को निर्मित करते हैं। उन अधिकांश गतिविधियों में, जो ई.सी.ई. के पाठ्यक्रम का हिस्सा होती हैं, सृजनात्मकता निहित होती है; बच्चे की खेलप्रियता तथा उसकी क्रियाशीलता और संलग्नता का पोषण करना ही वह तरीका है जिससे अभिव्यक्ति को अवसर मिलता है।

वार्षिक आयोजनों के रूप में कला : सम्बन्धों का सृजन करना

अकसर वार्षिक आयोजनों का बहुत दुरुपयोग होता है, क्योंकि वे एक जल्दबाजी का कैलेण्डर और समय सारणियों की भागमभाग निर्मित करते हैं। पर, हममें से प्रत्येक को स्कूल के उत्सवों की चहल–पहल की भिन्न–भिन्न स्मृतियों की याद जरूर आती है। तब स्कूल शान्त अनुशासित स्थानों के बजाय चित्रकारी, दस्तकारी या नृत्य और संगीत से भरे गुंजायमान क्षेत्रों में रूपान्तरित हो जाते हैं। स्कूल के गलियारों में जगह–जगह बच्चों की कलाकृतियाँ दिखाई देती हैं; वार्षिक आयोजनों में बच्चों के प्रदर्शन ही आकर्षण का केन्द्र होते हैं। मूल रूप से ये प्रदर्शन कलाओं में निहित अधिगम से बच्चों के सम्बन्धों को भी रेखांकित करते हैं।

पौराणिक चरित्रों की वेशभूषा में सजे हुए बच्चे सांस्कृतिक चिन्हों को समझते हैं, वहीं एक नागा की वेशभूषा में होना या एक सन्थाली साड़ी में सजना भी स्मरणीय अनुभव बन जाते हैं। अलग–अलग राज्यों की अपरिचित पोशाकें पहनने से एक तात्कालिक रूपान्तरण हो जाता है जो बच्चों को भौगोलिक परिवेश से दूरदराज के संसार में ले जाता है। यह पहनावे के अनुभवों के माध्यम से बच्चों को लोगों के जीवनों की विविधता के बारे में सोचने के लिए मजबूर करते हुए उनकी कल्पना को उकसाता है। जब बच्चे किसी अलग पहनावे को धारण करते हैं या किसी प्रकार के नृत्य में भाग लेते हैं, तो वे स्वयं से भिन्न किसी रूप में सोचते और कार्य करते हैं। प्रदर्शन के रूप में कला सामाजिक–सांस्कृतिक बहुलता से जुड़ने की योग्यता को पनपाती है। बच्चे नवीनता को अनुभव कर पाते है, और नए दृष्टिकोणों की सम्भावना से अवगत होते हैं।

संगीत तथा गीतों के बोल भाषाओं की लयों और ध्वनियों को उद्घाटित करते हैं। अंग–संचालन के द्वारा कला रूपों का अनुभव या मंचों की रचना करना ऐसे रंगों या आभाओं के प्रति संवेदनशील बनाता है जो विभिन्न भौगोलिक स्थितियों में महत्त्वपूर्ण होते हैं, इसके अलावा यह उनसे जुड़ी कहानियों, रीति–रिवाजों और परम्पराओं के प्रति उत्सुकता का भाव भी जगाता है।

निष्णात गुरुओं के माध्यम से कला

बच्चों के स्कूली जीवन में कलाओं के लिए अवसर निर्मित करने के लिए कुछ स्कूलों के पास दूसरे तरीके होते हैं। वे पेशेवर लोगों के साथ शिविर लगाने तथा नामचीन कलाकारों के साथ काम करने के अनुभवों को उपलब्ध करवाने के प्रयास करते हैं। यह केवल उनकी ख्याति और चमक–दमक से परिचय होने से कहीं बढ़कर होता है, क्योंकि निकट सम्पर्क उनकी विशेषज्ञता और कौशल के प्रति विस्मय तथा प्रेरणा जगाता है। कुछ स्कूलों ने ऐसे उपायों का प्रयास करके बच्चों को बहुत आनन्द दिया है।

स्पिक मैके भी इसी दिशा में एक कदम है। कला गतिविधियों को प्रमुखता देने से कई छिपी हुई निधियाँ प्रकट होती हैं, क्योंकि उनके अनेक आयाम होते हैं, जैसे :

- प्रेरणादायक,
- विविध प्रकार की प्रतिभाओं के मूल्य को स्थापित करना,
- विभिन्न पेशेवर कार्यों (वाद्य बजाना, मिट्टी की कलाकृतियाँ बनाना, गणितज्ञ – सभी साझा रूप से उसी मंच का उपयोग करते हैं) के प्रति आदर का भाव निर्मित करना,
- परिपूर्णता हासिल करने के लिए अभ्यास का महत्त्व समझना,
- अलग–अलग प्रतिभाओं वाले बच्चों को अपनी बात सम्प्रेषित करने और व्यक्त करने के लिए अवसरों को सुलभ कराना।
- जॉन डुई ने आर्ट एज एक्सपीरियंस (अनुभव के रूप में कला) में कलाओं की "परिपाटियों के बन्धनों और दिनचर्या के दोहराव की पपड़ी को तोड़कर चेतना को मुक्त करने" की इस अनोखी क्षमता के बारे में लिखा है। उनको लगता था कि कलाकार "हमेशा से ही समाचारों के असली वाहक रहे हैं, क्योंकि जो बात नई है, वह अपने–आप में बाहर घट रही घटना नहीं है, बल्कि उसके द्वारा प्रज्वलित की गई भावना, बोध तथा सराहना है"। जब हम स्वयं कलाओं का सृजन करना और उन पर प्रतिक्रिया करना शुरू करते हैं, तो हम भी भावना, बोध तथा सराहना की अग्नि को प्रज्वलित करते हैं। हम संसार के सतही यथार्थ के नीचे झाँकते हैं। हम अपनी कल्पना को आजाद कर देते हैं।

कलाएँ महत्त्वपूर्ण क्यों हैं?

1. वे ऐसी भाषाएँ होती हैं जिन्हें सभी लोग बोलते हैं, और जो नस्लीय, सांस्कृतिक, सामाजिक, शैक्षिक तथा आर्थिक अवरोधों को पार करती हुई सांस्कृतिक सराहना और जागरूकता को समृद्ध बनाती हैं।
2. वे उतनी ही महत्त्वपूर्ण सांकेतिक व्यवस्थाएँ होती हैं जितनी अक्षर तथा संख्याएँ होती हैं।
3. वे मन, शरीर तथा आत्मा का एकीकरण करती हैं।
4. वे आन्तरिक संसार को बाहर के स्थूल यथार्थ वाले संसार में लाकर आत्म–अभिव्यक्ति के लिए अवसर प्रदान करती हैं।
5. वे "प्रवाही अवस्थाओं" तथा चरम अनुभवों में प्रवेश करने के मार्ग प्रस्तुत करती हैं।
6. वे प्रेरणा, शिक्षण, आकलन और व्यावहारिक उपयोग के बीच अखण्ड सम्बन्ध निर्मित करती हैं जिसके परिणामस्वरूप गहरी समझ बनती है।
7. वे प्रक्रियाओं को शुरू से आखिर तक अनुभव करने का अवसर होती हैं।
8. वे स्वतंत्रता तथा सहयोग, दोनों का विकास करती हैं।
9. वे उत्तर के रूप में तत्काल प्रतिक्रिया और मनन करने के लिए अवसर प्रदान करती हैं।
10. वे व्यक्तिगत ताकतों को सार्थक तरीकों से उपयोग करना और इन ताकतों के द्वारा कभी–कभी कठिन अमूर्त अनुभूतियों तक समझ के पुल निर्मित करना सम्भव बनाती हैं।
11. वे प्रक्रिया तथा विषयवस्तु, दोनों के सीखने को मिला देती हैं।
12. वे परीक्षाओं के अंकों, रवैयों, सामाजिक कौशलों, समालोचनात्मक और सृजनात्मक सोच का संवर्धन करके अकादमिक उपलब्धियों को सुधारती हैं।
13. वे उच्च स्तर के सोचने के कौशलों (जिनमें विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन और "समस्या–खोज लेना" शामिल रहते हैं) का अभ्यास करवाती और विकास करती हैं।
14. वे किसी भी वैकल्पिक आकलन कार्यक्रम के अनिवार्य रूप से आवश्यक अंग होती हैं।
15. वे हर विद्यार्थी को सीखने के साधन प्रदान करती हैं।

निष्कर्ष तथा कक्षा की सरल रणनीतियाँ :

हमारे स्कूलों में हमने कलाओं के लिए कुछ न्यूनतम प्रावधान किए हैं, परन्तु यदि विद्यार्थियों की विविधता पर गौर करते हुए विभिन्न विकल्प प्रदान करने पर विचारपूर्वक अधिक ध्यान दिया जाए तो वह मानवीय विकास के लिए सृजनशीलता और शिक्षा की ओर ले जाएगा। कलाओं के अभिव्यक्ति–सहायक तथा गैर–एकल स्वरूप में अक्षमता से ग्रस्त बच्चों को भी उपयुक्त वातावरण मिलने का अवसर रहता है। स्कूलों को निम्न बातों पर ध्यान केन्द्रित करने की जरूरत है :

- विभिन्न रूपों को और अधिक शामिल करना : प्रतिक्रियाओं को एक ही प्रकार में ढालने के बजाय विभिन्न प्रकारों के लिए अवसर देना।
- स्कूल के भिन्न–भिन्न परिवेशों की सर्वोत्तम पद्धतियों का अन्वेषण करना : दिन के लिए संगीत।
- क्षेत्रीय दिवस : ड्रमों, मुखौटों, वेशभूषाओं के संग्रहालयों का उपयोग करना।
- क्षेत्रीय कलाएँ एवं उत्सव : विभिन्न कलाकारों से सम्बन्ध जोड़ना।
- बच्चों के प्रति उन्मुख प्रायोजनाओं के लिए कलाकारों से सम्पर्क करना।

कक्षा की गतिकी के लिए कुछ विचार

- कहानियाँ पढ़ें, साथ–साथ हँसें, बच्चों को पात्रों का अभिनय करने को प्रोत्साहित करें, आवाजों के उतार–चढ़ावों का उपयोग करें।
- काल्पनिक खेल के दौरान घर–गृहस्थी के या गुड़ियों के कोने में होने वाली चाय–पार्टियों में शामिल हों।
- घर–गृहस्थी/पोशाक धारण करने के कोने में परिवर्तन करके उसे बच्चों की अलग–अलग संख्या वाले घरों में बदल दें, या उसे तीन भालुओं की कहानी के पात्रों का मंच बना दें। गृहस्थी के उसी कोने को एक राकेट, पानी के जहाज या डाक्टर के दवाखाने में बदल दें।
- लकड़ी के ब्लॉक्स से मीनारें या पुल निर्मित करने के लिए बच्चों के साथ खेलें। उनके विभिन्न भूदृश्यों को रचने के लिए छोटी–छोटी पत्तियों या पुराने गत्ते के डिब्बों को जोड़ दें।
- बच्चों से बात करने के लिए और उन्हें नए गीत तथा उंगलियों के संचालन का खेल सीखने में मदद करने के लिए कठपुतलियों को आमंत्रित करें।
- नए प्रयोजनों तथा नए कार्यों के लिए स्थान बनाने को प्रोत्साहित करने के लिए कक्षा के फर्नीचर की व्यवस्था में बदलाव करें।
- साथ मिलकर खाना खाने के लिए या कहानियाँ सुनने के लिए सामान्य मेज के बजाय फर्श का इस्तेमाल करें।
- बच्चों को समय बिताने के लिए या पहेलियाँ हल करने के लिए छोटे–छोटे कोने बनाएँ।
- रोजमर्रा की आम वस्तुओं को नए उपयोगों के लिए इस्तेमाल करें। उदाहरण के लिए, एक रबड़ की गेंद को रंग में डुबोकर उससे चित्र बनाएँ या एक किताब को एक बात करने वाली कठपुतली में बदल दें, या एक मेज को उलट कर उसकी नाव बना दें।

आशा सिंह दिल्ली के लेडी इरविन कालेज में प्रोफेसर हैं। वे वहाँ मानवीय विकास पढ़ाती हैं। शिक्षा में कलाओं का उपयोग करना उनकी रुचियों का प्रमुख क्षेत्र है। उन्होंने शिक्षा में नाट्यकला (थिएटर) के क्षेत्र में काम किया है। पढ़ाने के अलावा, शिक्षा के उपकरण की तरह नाट्यकला का उपयोग करने के लिए, साथ ही आत्म–चिंतन प्रक्रिया को आरम्भ करने के लिए, वे शिक्षकों तथा बच्चों के साथ काम करती हैं। नाट्यकला में उनकी रुचि तथा नृत्य में प्रशिक्षण ने कक्षा की अभिनव शिक्षण तकनीकों को बढ़ावा दिया है। वे प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के मुद्दों को भी समय देती हैं। वे प्रारम्भिक बाल्यावस्था के स्तर से लेकर प्राथमिक स्तर तक की शिक्षा पर शिक्षकों के साथ घनिष्ठ रूप से काम करती हैं। उनसे asha.singh903@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : सत्येन्द्र त्रिपाठी